8 गुलमर्ग की खिड़की से एक रात

मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई. : निधन : सन् 1972 ई.)

मोहन राकेश का जन्म जालंधर (पंजाब) में हुआ था। इनके पिता व्यवसाय से वकील थे, परंतु उनकी साहित्य में बहुत रुचि थी। अत: राकेश को बचपन से ही घर में पर्याप्त साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। इन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और तत्पश्चात् डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक इन्होंने 'सारिका' कहानी पत्रिका का सफल सम्पादन किया और बाद में स्वतंत्र लेखन करते रहे। कहानी लेखन के साथ-साथ इन्होंने उपन्यास और नाटक भी लिखे थे। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'इंसान के खंडहर', 'नए बादल', 'एक और आदमी' आदि कहानी संग्रह तथा ' अंधेरे बंद कमरे', 'न आनेवाला कल' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे-अधूरे' तथा 'लहरों के राजहंस' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। मोहन राकेश मूलत: एक सफल कहानीकार तथा नाटककार हैं।

'गुलमर्ग की खिड़की से एक रात' 'परिवेश' से लिया गया है। इस यात्रा वृत्तांत में लेखक ने गुलमर्ग के प्राकृतिक सौंदर्य का स्वानुभूत विवरण प्रस्तुत किया है। गुलमर्ग का सारा वातावरण इनको अपने में समाया सा लगता है। 'गुलमर्ग' की एक रात' का अकल्पनीय सौंदर्य इनसे भुलाया ही नहीं जाता।

कुछ जगहें होती हैं जिन्हें आँख एक बार देखती है तो चौंक उठती है, फिर धीरे-धीरे परिचित होकर उदासीन हो जाती है। गुलमर्ग ऐसी जगह नहीं है।

मैं जब पहली बार गुलमर्ग गया, तो मुझे वहाँ कुछ भी असाधारण नहीं लगा-एक खुला सपाट मैदान, देवदारों के घने झुरमुट और बस! तब मैं घण्टे-भर में सारा गुलमर्ग देख आया था।

मगर बाद में महीनों वहाँ रहने पर एहसास हुआ कि पहली बार तो क्या, बाद में भी कभी उस स्थान को पूरा नहीं देख पाया-उसे पूरा कभी देखा ही नहीं जा सकता। शायद यही कारण है कि गुलमर्ग में रहकर वहाँ के साथ व्यक्ति की आत्मीयता धीरे-धीरे इतनी गहरी हो जाती है कि वह अपने को भी उस सपाट मैदान के एक हिस्से के रूप में ही देखने लगता है- काँपती तितलियों उठते बादलों और बर्फ से चमकती पहाड़ियों की तरह। दूसरी ओर वह पूरा विस्तार, जिसमें वह स्वयं भी रहता है, उसे अपने में समाया-सा लगता है- सूर्योदय और सूर्यास्त, दोनों सन्ध्याएँ, घना कोहरा, पीली धूप और सब-कुछ! इसलिए जब व्यक्ति गुलमर्ग से चलता है, तो एहसास होता है अपने से ही बिछुड़ने का- अपने उस रूप से जो कि इतना परिचित होते हुए भी सदा अपरिचित बना रह जाता है!

गुलमर्ग में सपने फूल बनकर उगते हैं- हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर, आकाश में। आँखें मुग्ध होकर देखती रहती हैं और फूलों में नये-नये रंग भर जाते हैं, वातावरण में नयी-नयी कोंपलें फूट आती हैं। हर क्षण एक नये अनुभव, नये रोमांच की सृष्टि होती हैं।... बादलों के पोर्टिको के नीचे लोग बाँहें फैलाये घास पर बैठे हैं। दूर-दूर तक सैलानियों की पंक्तियाँ घोड़े दौड़ाती नज़र आती हैं। रंगों के कुछ बिन्दु हरियाली के पट पर जहाँ-तहाँ छिटके हैं। सहसा प्रकाश से नन्हीं-नन्हीं पारदर्शक बूँदे पड़ने लगती हैं। रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है। हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है। मैदान सुरमई आभा ओढ़ लेता है। अब चारों तरफ़ धुन्ध-ही-धुन्ध है और बेबस होकर फैली पगडण्डियों की पतली-पतली नरम बाहें। जब तक बादल बरसेगा, बाँहें फैली रहेंगी-ऐसी ही कोमल, विस्मृत और निढाल।

सूरज चमकेगा तो फूल में से नया सपना जन्मेगा। आकाश में बादलों के नन्हें-नन्हें द्वीप इधर-उधर भटकते फिरेंगे। भेड़ों और बकरियों के रेवड़ पगडण्डियों पर टँक जाएँगे। दिन तब रात की प्रतीक्षा करता-सा प्रतीत होगा। रात आएगी तो सब कुछ खामोश हो जाएगा-मैदान की वह खामोशी भी, जो दिन के समय इतनी वाचाल हो जाती है!

गुलमर्ग की वह रात मुझे कभी नहीं भूलेगी। मैं होटल की खिड़की में खड़ा था। दूर-बहुत दूर सामने से एक बरसती घटा मेरी तरफ़ बढ़ती आ रही थी। मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कब वह मुझ तक पहुँचे और मुझे अपने में लपेट ले। बरसती घटा में घिर जाने से बड़ा सुख मैंने बहुत कम जाना है। घटा ऊपर से घिर आये और व्यक्ति को छोटा करके उस पर छा जाए, यह इससे अलग स्थिति है। इस बार आती हुई घटा का हर संकेत मेरे सामने था और मैं उसके बराबर का होकर अपनी खिड़की में खड़ा उसे बुला रहा था कि आ... आ... आ, मैं

तुझसे कमज़ोर नहीं हूँ। हवा तेज़ थी, मगर घटा तेजी से नहीं बढ़ रही थी- हालांकि तूफ़ान बहुत उठा हुआ था। बार-बार ज़ोर की गरज होती थी जिससे धरती और आकाश की शिराएँ काँप जाती थी। बार-बार सामने के चित्रपट पर बिजली कौंधती थी-और प्रकाश का वह भयानक विस्फोट हर चीज़ को नंगा कर जाता था। मैं खुश था कि थोड़ी देर में ये बूँदे मेरे ऊपर बरसेंगी-बिजलियों का यह क़हर मेरे ऊपर टूटेगा। मैं बाँहें फैलाकर सामने से उसे अपने ऊपर लेने के लिए तैयार था।

मगर अचानक हवा रूक गयी। बढ़ता हुआ तूफ़ान जहाँ का तहाँ ठिठक गया और दूर ही पर कटे पक्षी की तरह दम तोड़ने लगा। बिजली की साँस रुकने लगी-और मेरी भी-क्योंकि हवा के रुक जाने से मुझे भी बहुत ऊँचे आसमान से नीचे आना पड़ा था। तूफ़ान का जोम उतर गया और उसके साथ ही मेरा भी। मैं उसके बराबर का कभी नहीं हो सका।

वे ऐसे क्षण थे जो जीवन में दो-एक बार ही आते हैं। गुलमर्ग में रहते हुए ऐसे क्षण हर किसी के जीवन में किसी-न-किसी रूप में अवश्य आते होंगे। तभी तो मुद्दत तक वहाँ रह चुकने पर भी कोई आकर्षण व्यक्ति को फिर खींचकर वहाँ ले जाता है। वरना वहाँ है क्या-एक खुला सपाट मैदान जहाँ ज्यादा गॉल्फ खेली जा सकती है! व्यक्ति क्यों बार-बार वहाँ जाना चाहता है? क्या गॉल्फ खेलने के लिए ही?

शब्दार्थ और टिप्पणी

गुलमर्ग कश्मीर का एक सुन्दर प्राकृतिक रमणीय स्थान **तिगलिया** तिराहा, जहाँ तीन रास्ते मिलते हों **रोमांचकी** आनन्द देनेवाली, हर्षित करनेवाली **पोर्टिको** बरामदा, ड्योढ़ी **रेबड़** झुंड **कहर** अत्याचार **दम तोड़ना** मर जाना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
   (1) गुलमर्ग का भौगोलिक वातावरण कैसा है?
   (2) लेखक ने गुलमर्ग के साथ व्यक्ति की आत्मीयता बढ़ने का क्या कारण बताया है?
   (3) खिड़की के पास खड़ा लेखक बरसाती घटा को देखकर किस बात की प्रतीक्षा करने लगा?
   (4) तूफ़ान के एकाएक रूक जाने पर लेखक को कैसा अनुभव हुआ?
   (5) लेखक को किस बात का अफसोस हुआ?
   (6) लेखक ने गुलमर्ग की पगडण्डियों के लिए क्या उपमा दी?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
   (1) गुलमर्ग से विदा होते समय सैलानियों को कैसा अहसास होता है?
   (2) लेखक ने गुलमर्ग के दिन को वाचाल क्यों कहा?
   (3) सैलानी कब और क्यों सिहर जाते हैं?
   (4) लेखक की प्रतीक्षा असफल क्यों हुई?
3. **निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
   (1) लेखक ऐसा क्यों कहता है कि गुलमर्ग को कभी पूरा देखा नहीं जा सकता?
   (2) 'दिन में गुलमर्ग की शोभा' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
   (3) प्रकाश, बादल तथा हवा के कारण गुलमर्ग दर्शन में आए रोमांच का वर्णन कीजिए।
4. **पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :**
   (1) गुलमर्ग में सपने फूलकर उगते हैं- हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर आकाश में।
   (2) रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है।

5. 'हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है' – यह दृश्य किस समय का है?
(अ) प्रात:काल (ब) दोपहर (क) सायंकाल (ड) अर्धरात्रि

6. (1) उचित उपसर्ग जोड़कर उनके विरुद्धार्थी शब्द बनाइए :
साधारण, मान, उदार, रंग, स्मृति
(2) उचित प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाइए :
सुरमा, बरसात, तूफ़ान, चमक, विस्फोट
(3) उचित प्रत्यय जोड़कर संज्ञा बनाइए :
लाल, खामोश, कमजोर, आकर्षक

7. **वाक्य में प्रयोग कीजिए :**
विस्फोट, आकर्षण, पारदर्शक, रोमांचक

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- राहुल सांस्कृत्यायन की 'मेरी लद्दाख यात्रा' पुस्तक पढ़िए।
- आपने जिन पर्यटन स्थलों की यात्रा की है, उनका वर्णन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- किसी यात्रा का आयोजन करें।
- यात्रा वर्णनों का संकलन करवाइए।

●